

भोजपुरी लोकगीतिका

[मॉरिशस के लोक साहित्य विशेषज्ञ श्री प्रह्लाद रामशरण की
माता श्रीमती सुन्दरी देवी द्वारा संकलित]

श्रीमती सुन्दरी रामशरण

भूमिका एवं सम्पादन
डॉ. कुबेर मिश्र



This One



Y2F5-1JN-XX4U

आत्माराम एण्ड संस

दिल्ली

लखनऊ

ISBN : 81-7043-531-5

© सुरक्षित

प्रकाशक : आत्माराम एण्ड संस

1376, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006

दूरभाष : 011-23946466, 23973082/83

फैक्स : 011-23973084

E-mail : atmaram_books@hotmail.com

शाखा : 17, अशोक मार्ग, लखनऊ

दूरभाष : 0522-2231385

संस्करण : 2009

मूल्य : रु. 150.00

मुद्रक : बी. के. ऑफसेट, शाहदरा, दिल्ली-110032

BHOJPURI LOKGITIKA (Bhojpuri Folk Songs)
by Shrimati Soondree Ramsurrun

लोक भजन

अपन गंगा मैया के पान फूल चढयबों
हँसें ली गंगा मैया रोवे¹ यदुवंसी हो
अपन गंगा मैया के हुँमिया करयबों
हँसें गंगा मैया रोवे यदुवंसी²
अपन गंगा मैया के पीठा³ चढयबों
हँसें ली गंगा मैया रोवे यदुवंसी हो
अपन गंगा मैया के पठिया चढयबों
हँसें ली गंगा मैया रोवे यदुवंसी हो
अपन गंगा मैया के अरघ गीराब हो
हँसें ली गंगा मैया रोवे यदुवंसी हो
पहले डूबूकिया बेटा मांगीला रहसत घर हम जाइब हो
दूसरा डूबूकिया हम बेटा मांगीला रहसत ही घर हम जाइब हो

भावार्थ

मैं अपनी गंगा मैया को पान-फूल, हवन, पीठा, पाठ, अर्घ्य चढ़ाऊँगी और पहली डुबकी में पुत्र माँगकर हँसते हुए घर जाऊँगी। दूसरी डुबकी में बेटा माँगूँगी और खुश हो घर जाऊँगी।

प्रस्तुत गीत में पुत्र और पुत्री की कामना साथ-साथ की गयी है किन्तु पुत्र की माँग पहली ही डुबकी में प्रस्तुत है।

□

1. आज भी पुत्र-जन्म को प्राथमिकता दी जाती है। किन्तु कन्यादान के लिए एक पुत्री की कामना भी है। गंगा मैया को अर्घ्य देकर पुत्र और पुत्री दोनों के प्राप्ति की कामना की गयी है।
2. इस गीत में यदुवंशी के रोने का कोई औचित्य नहीं लगता—पुराने गीतों में शब्दों के विपर्यय के कारण सन्दर्भ संदिग्ध हो जाता है।
3. देवताओं को चढ़ाने का आटे का भोज्य पदार्थ।

देवता गीत

कहवाँ से आवेले भवानी¹ मैया अवरु शीतल मैया
कहवाँ से आवेले भगवान अवरु² शिवशंकर हो
कवरु³ से आवेलन भवानी मैया अवरु शीतल मैया हो
सरगे से आवे भगवान् अवरु शिवशंकर हो
कहवाँ बैसइबों भवानी मैया अवरु शीतल मैया हो
कहवाँ बैसइबों भगवान अवरु शिवशंकर हो
देवी के चउरवे भवानी मैया अवरु शीतल मैया हो
सोने के गदिये भगवान अवरु शिवशंकर हो
काइ खियैबो भवानी मैया अवरु शीतल मैया हो
काइ खियैबो भगवान और शिवशंकर हो
लड्डूवे खियैबों भवानी मैया अवरु शीतल मैया हो
फलवे खियैबों भगवान अवरु शिवशंकर हो
काइ ले मनयबों भवानी मैया अवरु शीतल मैया हो
काइ ले मनइबों भगवान अवरु शिवशंकर हो
हुमिये मनइबों भवानी मैया अवरु शीतल मैया हो
आरती ले मनइबों भगवान अवरु शिवशंकर हो

भावार्थ

पार्वती माता और शीतला माता कहाँ से आती हैं ? भगवान् और शंकर कहाँ

1. पार्वती।

2. और।

3. कँवरु—कामरूप। असम में कामरूप में कामाख्या देवी का सिद्धपीठ है, इसलिए कँवरु—कमच्छा का उल्लेख लोकगीतों में आता है।